दिनांक :- 09-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

वर्ग :- B.A Part (I) प्रतिष्ठा इतिहास (History Honours)

(आहार संस्कृति की विशेषता)

(Paper One)

आहार से बने हुए मकान लकड़ी व कच्ची मिट्टी के बदले पत्थरों के मिले है। इस संस्कृति का काल 2400 से 1400 ई० पू० है।

पश्चिम मध्य प्रदेश मे मालवा संस्कृति का विकास हुआ। इससे पूर्व कायथा संस्कृति का भी विकास हो चुका था। इसका काल 2000 ई० पू० से 1800 ई० पू० था जबकि मालवा का 1700 से 1200 ई० पूर्व है।

मालवा संस्कृति का मूल क्षेत्र मालवा, कायथा व ऐरण है। मालवा संस्कृति अपनी मृत गाँडो की उत्कृष्टता के लिए जानी जाती है। आगे मालवा संस्कृति का प्रसार महाराष्ट्र क्षेत्र मे भी हुआ

Scanned with CamScanner

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

02

1964 में वी० एस वाकणकर के द्वारा कयथा संस्कृति को प्रकाश में लाया गया। 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास ने आहड़ संस्कृति में मकानों से गंदे पानी की निकासी की वैज्ञानिक पद्धति कायम की। इसे चक्र कूप के नाम से जाता है। ताप्ति नदी की घाटी में (2000-1800 ई० पू०) स्वालदा तथा महाराष्ट्र मे जोरवे संस्कृति का विकास हुआ। जोरवे संस्कृति के अंतर्गत मुख्य क्षेत्र जोरवा, नेवासा दायमवाद, इनामगाँव, प्रकाश, नासिक चंदोली इत्यादि थे।

जोरवे संस्कृति के अंतर्गत घरो की बनावट वर्गाकार, आयाताकार, वृत्ताकार होती थी। दीवारें मिट्टी या गारे को मिलाकर बनाई जाती है। दायमवाद में प्राप्त ताँबे की चार वस्तुएँ है। रथ चलता मनुष्य, साँड

गैंडा एवं हाथी ! जोरवे

संस्कृति का सबसे बड़ा स्थल दायमवाद ही है। यहां में चार संस्कृतियों के स्तर प्राप्त हुए है। सबसे बड़ा उत्खनित ग्रामीण स्थल नवदाटोली है। सर्वाधिक फसलों की खोज संख्या नवदाटोली से प्राप्त हुए है।

पूर्वी भारत में चिरांद, सेनुआर, सोनपुर व तारा डीह में ताम्रपाषाणकालीन स्थल मिलते है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में खैराडीह व नरहन में ताम्रपाषाण कालीन स्थल मिलते है। इसी तरह बंगाल में पांडु रजार ढीबी तथा महीसादल में ताम्रपाषाण कालीन स्थल प्राप्त हुए है।

गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति

गंगा-यमुना दोआब में हमें गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति का साक्ष्य मिलता है। इसका काल 2000 से 1500 ई० पू० निर्धारित किया गया है।

M	T	W	T	F	S	S
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

04

गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति में घर सरपत के बनाए जाते थे और उस पर मिट्टी की लथ्पायी की जाती थी। फर्श थापी गयी मिट्टी से बनायी गयी थी।

गंगा-यमुना दोआब एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति का सर्व प्रथम साक्ष्य 1950 ई० में बदायूं के पास रिसोली और बिजनौर के पास राजपुर परशु से प्राप्त हुआ है।

कुछ क्षेत्रो जैसे अम्बरखेरी, बहेरिया, बहादरा बाद, झिंझाना, लाल किला, अंतरजीखेरा,

05 SUNDAY

साईपाई आदि की खुदाई से नियमित बस्तियाँ होने के लक्षण नही मिले है

साईपाई से गेरूए मृदभाण्ड संस्कृति क्षेत्र में ताम्र मत्स्य भाला भी प्राप्त हुआ है।

अब तक कुल 110 स्थल प्रकाश में आ चुके है।